

Padma Shri



SMT. PURNAMASI JANI

Smt. Purnamasi Jani is a noted Kui poetess from Odisha known for her devotional songs and poems which she sings in Kui dialect. She is a tribal social activist and spiritual leader from Kandhamal District of Odisha. She has done a lot of work to spread social harmony, education, removal of superstitions, improvement of living conditions among the tribal people of Odisha mainly in Kandhamal, Boudh, Kalahandi and undivided Koraput District.

2. Born on 1st January, 1936 in the Village Dalapada of Khandhal District, Odisha in a kui tribal family, Smt. Purnamasi married to Nilakantha Jani of Charipada Village of Kandhamal at an early age. She went to the holy hill of Tadisaru, worshipped by Kui tribes of Kandhamal for a special prayer in 1969, and with deep devotion and meditation, started singing Bhajans, Aratis and devotional songs instantly for two to three hours. Though, she is illiterate and only able to speak in Kui tribal language, she has been singing songs in Odia, Kui and Sanskrit language. Her each song is unique in itself with proper rhythm and with high social, moral, spiritual values.

3. Smt. Purnamasi has been visiting different villages of Kandhamal and through her devotional songs, has been creating awareness among tribal people about the ill effects of various social evils such as superstitions, drinking liquors, early age girl marriage, wrong information about family planning etc. She has been instrumental in creating harmony among many broken tribal families and bringing unsocial youth to the mainstream of the society. She has also been working towards education of girl child. Her social service through prayers and devotional songs has spread gradually from Kandhamal to different other parts of Odisha. She has been invited by different social and spiritual organizations, literature groups, tribal organizations for prayer and social messages.

4. Smt. Purnamasi has received various honours and awards including Odisha Sahitya Academy award for poetry in 2006; South Odisha Literature award 2008; Bhasa and Sanskriti Academy award 2008; Felicitation by Sri Jagannath temple administration in 1996; Ananya Srikhetra Samman 2017; Kandhamal District Literature Festival award 1993; Banshidhar Lila Panda Saraswati Sammana 2018; Aranya Santha Sammana 2018 by Kalinga Bharati Foundation, New Delhi etc.



श्रीमती पूर्णमासी जानी

श्रीमती पूर्णमासी जानी ओडिशा की एक प्रख्यात कुई कवयित्री हैं जो कुई बोली के अपने भजनों और कविताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। वह ओडिशा के कंधमाल जिले की एक जनजातीय सामाजिक कार्यकर्ता और आध्यात्मिक गुरु हैं। उन्होंने मुख्य रूप से कंधमाल, बौद्ध, कालाहांडी और अविभाजित कोरापुट जिलों में रहने वाले ओडिशा के जनजातीय लोगों के बीच सामाजिक सद्भाव, शिक्षा के प्रचार—प्रसार, अंधविश्वास उन्मूलन, रहन—सहन की स्थिति में सुधार लाने के लिए काफी काम किया है।

2. 1 जनवरी, 1936 को ओडिशा के खंडाल जिले के दलपद गांव के एक कुई जनजातीय परिवार में जन्मी श्रीमती पूर्णमासी का विवाह कम उम्र में कंधमाल के चारीपद गांव के नीलकंठ जानी से हुआ था। वह 1969 में एक विशेष प्रार्थना के लिए कंधमाल की कुई जनजातियों द्वारा पूजी जाने वाली ताडिसारु की पवित्र पहाड़ी पर गईं और अगाध भक्ति और साधना के साथ लगातार दो—तीन घंटे तक भजन और आरती गाती रहीं। वैसे वह निरक्षर हैं और केवल कुई जनजातीय बोली बोल सकती हैं लेकिन वह ओडिया, कुई और संस्कृत भाषा में गीत गाती हैं। शुद्ध लय से युक्त उनका प्रत्येक गीत अपने आप में बेमिसाल होता है और उसमें ऊंचे सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य समाहित होते हैं।

3. श्रीमती पूर्णमासी कंधमाल के विभिन्न गांवों का दौरा कर रही हैं और अपने भक्ति गीतों के माध्यम से आदिवासी लोगों में अंधविश्वास, मद्यपान, कम आयु में कन्या विवाह, परिवार नियोजन के बारे में गलत जानकारी आदि अनेक सामाजिक बुराइयों के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा कर रही हैं। वह मन—मुटाव में फंसे कई जनजातीय परिवारों के बीच सद्भाव पैदा करने और असामाजिक युवाओं को समाज की मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। वह बालिकाओं की शिक्षा की दिशा में भी कार्य कर रही हैं। उनकी समाज सेवा प्रार्थना और भजन के माध्यम से धीरे—धीरे कंधमाल से ओडिशा के विभिन्न अन्य हिस्सों में फैल चुकी है। विभिन्न सामाजिक और आध्यात्मिक संगठन, साहित्यिक समूह, जनजातीय संगठन उन्हें प्रार्थना और सामाजिक संदेशों के लिए आमंत्रित करते हैं।

4. श्रीमती पूर्णमासी को 2006 में कविता के लिए ओडिशा साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित विभिन्न सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं जिनमें दक्षिण ओडिशा साहित्य पुरस्कार 2008; भाषा और संस्कृति अकादमी पुरस्कार 2008; 1996 में श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन द्वारा सम्मान; अनन्य श्रीक्षेत्र सम्मान 2017; कंधमाल जिला साहित्य महोत्सव पुरस्कार 1993; बंशीधर लीला पंडा सरस्वती सम्मान 2018; कलिंग भारती फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा अरण्य संत सम्मान 2018 आदि शामिल हैं।